5

जंगल में घूमने का समय

मिसर से निकलने से लेकर यरदन पार जाने तक, 1491-1451 ई.पू. (निर्ग. 15-40, लैव्य., गिनती., व्यवस्था.)

I. लाल सागर से सीनै पर्वत तक (निर्ग. 15-18)

1. छुटकारे का गीत (निर्ग. 15)। –लाल सागर के पूर्वी किनारे पर इस्राएल की भावनाओं को आसानी से व्यज़्त या महसूस नहीं किया जाता। विनम्र परन्तु विजयी धन्यवाद से वे अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे होंगे। घमण्ड करने की कोई वजह नहीं थी। उनका संकट इतना बड़ा और यहोवा की ओर से छुटकारा इतना संपूर्ण था कि केवल उसी की महिमा बड़े शानदार ढंग से सुनाई देती है जो हम तक छुटकारे के एक स्मारक के रूप में पहुंचती है।[1]

2. रपीदीम की ओर कूच। –इस्राएली विजय के दृश्य टालमटोल नहीं कर पाए। राष्ट्रीय संगठन सीनै पर जाकर पूरा होना है। वहां जाने के लिए रास्ता समुद्र के पूर्वी तट के साथ-साथ होकर जाता था; ज़िले के उज़र को ''शूर का जंगल'' और दक्षिण को ''पाप का जंगल'' कहा जाता है। मारा के जल को मीठा करना और ऐलीन के बारह सोतों और खजूर के सज़र पेड़ों के पास डेरा लगाना मिसर से कूच की प्रारज़्भिक घटनाएं थीं। वे पाप के भयानक जंगल में प्रवेश करते हैं।[2] मिसर से लाया गया भोजन समाप्त होने लगता है और भूख के पूर्वाभास के साथ प्यास की टीस भी जुड़ जाती है। मिसर से छुटकारे और परमेश्वर की दृढ़ प्रतिज्ञाओं को भूलकर लोग मूसा पर बुड़बुड़ाने लगते हैं जिस कारण वे मृत्यु के जंगल में आ जाते हैं। और अब अनुग्रह का वह आश्चर्यकर्म अर्थात मन्ना मिलने लगता है जो जंगल में उनके चालीस वर्ष तक घूमने के दौरान हर रोज़ मिलता रहा, जिसका इस्तेमाल यीशु ने अपने आप को स्वर्ग की रोटी के रूप में दिखाने के लिए एक सुन्दर प्रतीक के रूप में किया।

3. रपीदीम में डेरा। –अब इस्राएली पाप के जंगल में कठोर मैदान को छोड़कर रपीदीम की घाटी में डेरा डालते हैं। वे होरेब नामक पहाड़ी ज़िले के दर्रों में प्रवेश कर रहे थे। वहां वे फिर पानी के लिए तड़पने लगे। मूसा ने चट्टान को मारा और वहां बहुत सा पानी निकल आया। यहां पर अमालेकियों ने उन पर ज़ोरदार आक्रमण किया। इस आक्रमण का जवाब यहोशू की अगुआई में कुछ चुने हुए लोगों ने दिया जबकि हारून और हूर ने मूसा के

हाथ प्रार्थना के लिए उठाए रखे। यहां मूसा भी जो उस बड़े संघर्ष और मिसर से निकलने के समय यित्रो के साथ था, अपने परिवार के साथ शामिल हो गया। यित्रो ने न्याय का प्रबन्ध करने के बारे में बहुमूल्य सुझाव देकर मूसा की सहायता की।

II. सीनै का वर्ष

मूसा ने रपीदीम से सीनै पर्वत तक इस्राएल की अगुआई की। गहरे दर्रों के बीच में से जाना उन्हें भयभीत करने के लिए पहले से सोचा समझा था। अन्त में वे, निकलकर एक मैदान में डेरा लगा लेते हैं, जिसके सामने पवित्र पर्वत, पत्थर की बहुत बड़ी वेदी की तरह एक हज़ार पांच सौ फुट तक ऊंचा उठ गया था।[3]

1. कौमी वाचा (निर्ग. 19; 20)। -इब्राहीम से की गई वाचा पुरखाओं के समय बार-बार दोहराई गई, जलती हुई झाड़ी में हाल ही में मूसा के साथ दोहराई गई थी, फिर से यहां दोहराई गई और एक राष्ट्रीय वाचा के रूप में उसे विस्तार दिया गया। जिसने इब्राहीम को बुलाया और पुरखाओं की देखभाल की थी; जिसने मिसर में अपने लोगों के कराहने की आवाज सुनी थी; जिसने उनकी अगुआई करके उन्हें भोजन खिलाया और यहां तक आने में उनकी रक्षा की थी, अब वह उन्हें अपने साथ वाचा के विशेष सम्बन्धों में आने की पेशकश करता है। वाचा, जो मूसा के द्वारा परमेश्वर की ओर से दी गई थी, लोगों द्वारा स्वीकार की गई, एक पुस्तक में लिखी गई और बलिदानों और लहू छिड़कने के द्वारा पक्की की गई। गर्ज, चमक और भूकम्प के बीच सीनै की चोटी से बोलकर दी गई यह वाचा, दस आज्ञाओं में विस्तार से बताई गई। बाद में उन्हें परमेश्वर ने पत्थर की पट्टियों पर लिख दिया था। वे आज्ञाएं इस प्रकार हैं:

(1) तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
(2) तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना।
(3) तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।
(4) तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।
(5) तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
(6) तू खून न करना।
(7) तू व्यभिचार न करना।
(8) तू चोरी न करना।
(9) तू किसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।
(10) तू किसी के घर का लालच न करना।

रोम की बारह सूचियों से एक हज़ार वर्ष पूर्व और लिकुरगुस के नियमों के दिए जाने से पांच सौ वर्ष पूर्व सीनै पर दी जाने वाली नियमावली बहुत ही महान थी। दस आज्ञाओं को वैधानिक और औपचारिक नियम के एक पूर्ण भाग में आगे विस्तार दिया गया था।

2. कौमी याजकाई। -पुरखाओं के समय में परिवार का मुज़िया ही याजक का काम करता था। मिसर से जाने के बाद, जब पूरी कौम को पवित्र, माना गया तो पहलौठे को विशेष रूप से इस काम के लिए दिया जाता था (निर्ग. 13:2,11-15)। बाद में पहलौठे के स्थान पर याजकों के गोत्र के रूप में लेवी के गोत्र को अलग किया गया (गिनती 3:5-13)। हारून के परिवार को याजक होने के लिए अलग किया गया जबकि स्वयं हारून और उसके बाद उसकी संतान में सबसे बड़े पुत्रों को यहूदी कौम में सर्वोच्च पद अर्थात महायाजक का पद दिया जाता था।

3. कौमी पर्व। -तीन वार्षिक पर्व होते थे। वे उनके कौमी इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं को याद करने के लिए थे, परन्तु उन सबके मनाने का समय इस प्रकार निर्धारित किया गया था कि वे कटनी के समय के बाद चरणों में आएं।

क. फसह, या अखमीरी रोटी का पर्व, मिसर से निकलने की रात शुरू हुआ था और इसे दासता से उनके छुटकारे को याद करने के लिए मनाया जाता था; अबीब 14-21 (अप्रैल के आरज़्भ) पर, यह कटनी के आरज़्भ के लिए ही मनाया जाता था। इसकी मुज़्य बातें फसह का मेमना, अखमीरी रोटी और कड़वी भाजी के साथ खाना और कटनी के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के चिह्न के रूप में पकी हुई फसल के एक पूले को हिलाते हुए खाना था।

ख. अठवारों या पिन्तेकुस्त का पर्व। यह पर्व फसह के पचास दिन बाद आता था और फसल की कटाई के अन्त में मनाया जाता था। बाद में यहूदी लोग इसे व्यवस्था के दिए जाने के स्मरण के रूप में भी मनाने लगे, जो प्रथम फसह के लगभग पचास दिन बाद दी गई थी। प्रमुख धार्मिक समारोह पकी हुई रोटी के रूप में पहले फल की भेंट लाना होता था।

ग. झोंपड़ियों या मण्डपों का पर्व। -यह पर्व सातवें महीने की पन्द्रह से 22 तारीख तक मनाया जाता था। एक तरह से यह सफल के घर आने अर्थात फलों के इकट्ठे होने के जश्न के रूप में मनाया जाता था। यह पर्व यहूदियों के धन्यवाद का जश्न था। जंगल में चालीस वर्ष तक तज़्बुओं में रहने को स्मरण करने के लिए वे एक सप्ताह तक टहनियों से बनाई झोंपड़ियों में रहा करते थे।

4. कौमी मन्दिर। -सीनै पर रहने के वर्ष में मन्दिर या तज़्बू बनाया गया था। यह पन्द्रह फुट चौड़ा और पैंतालीस फुट लज़्बा चलता-फिरता छोटा सा मन्दिर था। पन्द्रह फुट चौड़े और तीस फुट लज़्बे ''पवित्र स्थान'' में धूपदानी, मेज़ की रोटी, सोने के सात दीवट रखे हुए थे, ''परम पवित्र स्थान'' पन्द्रह फुट चौड़ा, लज़्बा व उतना ही ऊंचा था, और उसमें वाचा का संदूक, मन्ना से भरा हुआ मरतबान और हारून की छड़ी जिसमें फूल फल आ गए थे, के अलावा कोई दूसरा फर्नीचर नहीं था। परम पवित्र स्थान में केवल महायाजक ही जा सकता था और वह भी तब जब प्रायश्चित के उस बड़े दिन लोगों के पापों के लिए वार्षिक भेंट देनी होती थी। मन्दिर के आस-पास खुले आंगन में होमबलि की वेदी और हौदी थी। जंगल में भ्रमण के दौरान और शीलो में बस जाने के बाद वे मन्दिर को जो तज़्बू की तरह था साथ रखते थे, और सुलैमान का मन्दिर बनने के समय तक, चार सौ से अधिक वर्षों तक

राष्ट्रीय आराधना उसी में होती रही।

5. कौमी बलिदान। –इब्रानी लोगों की आराधना की विशेष बातें बलिदान ही थीं। ये बलिदान पशुओं के या भूमि के फल के हो सकते थे। पशुओं के बलिदानों को तीन मुज़्य भागों में बांटा गया था:

क. होम बलियां। –ये बलिदान हर रोज, सुबह–शाम दिए जाते थे; और उसे पूरा खत्म करना होता था। यह परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पित होने का संकेत था।

ख. मेल बलियां। –इन बलिदानों की विशेष बात एक पर्व के लिए बलिदान के भाग को अलग रखना होता था जिसके लिए भेंट करने वाला अपने मित्रों को निमन्त्रण दे सकता था। ये बलिदान परमेश्वर के साथ सहभागिता और संगति को व्यज़्त करते थे और कभी–कभी बहुत बड़ी संज़्या में दिए जाते थे।

ग. पाप या दोष बलियां। इन्हें व्यज़्तिगत या राष्ट्रीय बलिदान कहा जा सकता है। दोनों ही स्थितियों में बलिदान केवल एक पशु का होता था। कुछ भाग वेदी पर जला दिया जाता था और कुछ याजक द्वारा खाया जा सकता था, परन्तु जिस बर्तन में यह पकाया जाता था यदि वह धातु का हो तो बाद में उसे मांजना और यदि मिट्टी के बर्तन में पकाया गया हो तो उसे तोड़ देना आवश्यक होता था। आंतें आदि डेरे के बाहर जला दी जाती थीं। पाप बलि की रीति पाप से अशुद्ध होने का सबक समझाने के लिए थी।

6. कौमी विश्वास त्याग। –सीनै पर्वत के नीचे पहली बार कौमी या राष्ट्रीय वाचा तोड़ी गई थी। पहाड़ पर मूसा के जाने पर लोग पूजा करने के लिए देवता की मांग करने लगे थे। हारून को मजबूर होकर उनकी बात माननी पड़ी। मिसरियों द्वारा बछड़े की पूजा करने की नकल करके उसने सोने का एक बछड़ा बनाया और इस्राएल ने मूर्तिपूजकों की तरह जश्न मनाया। मूसा हाथ में पत्थर की पट्टियां लिए वापस आया। जैसे उन्होंने वाचा को तोड़ा था वैसे उसने भी इन पट्टियों को जिस पर यह लिखी गई थीं, तोड़ डाला। उसकी सिफारिश से लोगों को छोड़ दिया गया, यद्यपि उनके अपराध के कारण तीन हज़ार लोग मर गए थे; वाचा फिर से दोहराई गई और नई पट्टियां तैयार की गईं।

III. सीनै से कादेश तक

1. गणना। –सीनै से डेरा उठाने से पहले सब गोत्रों की गणना की गई। जंगल में घूमने के अंत में, अठज़ीस वर्ष बाद एक बार फिर से गणना की गई। इस दोहरी गणना के कारण ही गिनती की पुस्तक को यह नाम दिया गया था।

2. कादेश की ओर कूच। –मिसर से निकलने के एक वर्ष बाद, इस्राएल ने सीनै से कनान के दक्षिणी किनारे से कादेश को कूच किया। रास्ता थका देने वाला था। तबेरा में लोग कुड़कुड़ाने लगे और उन्हें आग ने भस्म कर दिया। फिर से आगे चलने से पहले, इस्राएल ने अपने साथ आने वाली मिली जुली भीड़ के बहकावे में आकर मन्ना को तुच्छ जाना और मिसर से मिलने वाले भोजन की इच्छा की। बहुत संज़्या में बटेर भेजे गए; परन्तु उनके साथ एक महामारी भी आई जिससे बहुत से मारे मर गए और तबेरा (अर्थात जलन)

का डेरा किबरौथतावह (अर्थात कामुकता की कब्रें) बन गया। इस कूच की एक और बुरी घटना हारून व मिरियम का विद्रोही आचरण था। मिरियम को कोढ़ हो गया परन्तु मूसा की सिफारिश से वह फिर से ठीक हो गई।

3. विश्वास टूटना। –उस देश का पता लगाने के लिए कादेश से बारह जासूस भेजे गए। उन्होंने आकर एक मत से उस देश की तारीफ की जिसके उपजाऊपन के प्रमाणों के रूप में अत्यधिक आकर्षक फल थे। परन्तु कालेब और यहोशू को छोड़ सब ने उस पर विजय को पाने में निराशा जताई। कौम का विश्वास पूरी तरह से टूट गया। उन्होंने एक और अगुवे को चुनने और मिसर को लौटने का सुझाव दिया। कालेब और यहोशू जिन्होंने उन्हें उत्साहित करना चाहा था, बड़ी मुश्किल से पथराव होते-होते बचे। पहले भी कई बार उनका विश्वास कमज़ोर हुआ और डगमगाया था। परन्तु पहले उन्होंने कभी भी इस तरह प्रतिज्ञा किए हुए देश से मुंह नहीं मोड़ा था और न ही बंधुआई के अपने घर की ओर मुंह किया था। यह उनके अविश्वास का चरम था (इब्रा. 3:19)। अठज़ीस वर्ष के लज़्बे समय के लिए इस अविश्वासी पीढ़ी को उनकी हड्डियां जंगल में एक-एक करके घिसने तक जंगल में भटकने का दण्ड दिया गया था। उनमें से केवल कालेब और यहोशू ही कनान में जीवित प्रवेश कर सके थे। सज़्त तोड़ने वाले का दण्ड, कोरा का विद्रोह, दातान और अबीराम और हारून की छड़ी के अंकुरित होने से महायाजक के रूप में उसके अधिकार की पुष्टि, इस काल की घटनाएं हैं। इसके अंत में इस्राएली फिर कनान की ओर अंतिम चढ़ाई के लिए कादेश में इकट्ठे हुए।

IV. कादेश से यरदन तक

कादेश में दूसरे प्रवास के समय, मूसा और हारून ने चट्टान को दो बार मार कर पाप किया और उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिली। यहीं मिरियम की मृत्यु हो गई। एसाव के वंशज एदोमियों ने अपने इलाके में से रास्ता देने से इन्कार कर दिया और इस्राएली दक्षिण की ओर लाल सागर के पूर्वी छोर से होते हुए लज़्बा सफर तय करते हैं। रास्ते में हारून की मृत्यु हो जाती है और उसे होर पर्वत पर गाड़ दिया जाता है। अविश्वास के एक बार फिर से होने पर दण्ड के रूप में विषैले सांप भेजे जाते हैं। चंगाई देने के माध्यम के रूप में, मूसा क्रूस पर मसीह के प्रतिरूप, पीतल का सांप, ऊंचे पर उठाता है। इस्राएल ने यरदन के पूर्व में शज़्तिशाली अमोरी राजाओं, ओग और सीहोन पर विजय पाई। रूबेन के गोत्र, अर्थात गाद और आधा मनश्शै उनके इलाके में बस गए। विजयी होकर इस्राएल की आगे बढ़ने की चेतावनी से मोआब के राजा ने बलाम नामक प्रसिद्ध दर्शी को घूस देकर उन्हें श्राप देने के लिए कहा परन्तु जब वह उन्हें श्राप देने के लिए मुंह खोलता तो उसके मुंह से उनके लिए आशीष ही निकलती थी। परन्तु उसने अप्रत्यक्ष रूप से वह काम किया जो वह प्रत्यक्ष रूप से नहीं कर सकता था। उसने इस्राएल को मोआब और मिद्यान के साथ पाप में शामिल किया जिससे परमेश्वर के हज़ारों लोग उस महामारी में फंस गए जो दण्ड के रूप में उन पर भेजी गई। परन्तु अंत में, बंजर जंगलों की हर कठिनाई, खतरनाक

शत्रुओं और उनके अपने ही अविश्वास के बावजूद, इस्राएली पूर्वी ओर यरदन के पास डेरा लगाते हैं। मूसा अपना विदाई संदेश देता है जिसमें व्यवस्थाविवरण का अधिकतर भाग है। पिसगा की चोट से उसे प्रतिज्ञा किया हुआ देश दिखाया जाता है। वहां उसकी मृत्यु हो जाती है और उसे एक अज्ञात कब्र में दफ़ना दिया जाता है। *उसका* काम पूरा हो गया था। उसने अपने लोगों को छुड़ा दिया था अर्थात गुलामों की एक जाति को संगठित कौम बना दिया था और प्रतिज्ञा किए हुए देश के द्वार तक पहुंचा दिया था। वह अपने मिशन और जीवन को वहां रख देता है या अर्पित कर देता है।

पाद टिप्पणियां

[1]मूसा के गीत और पिन्तौर की कविता में तुलना के लिए, गिज़्सोन की ''मोज़ेक इरा,'' पृ. 62 देखें। [2]इन जंगलों में यात्रा के विवरण के लिए, गेकी की ''आर्स विद द बाइबल,'' अंक 2, पृ. 200, 201, 210, 211 देखें। [3]''आर्स विद द बाइबल,'' अंक 2, पृ. 251–253, 261–264 देखें।